

श्री राम चालीसा

श्री रघुवीर भक्त हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
निशिदिन ध्यान धरै जो कोई। ता सम भक्त और नहिं होई ॥1 ॥

ध्यान धरे शिवजी मन माहीं। ब्रह्म इन्द्र पार नहिं पाहीं ॥
दूत तुम्हार वीर हनुमाना। जासु प्रभाव तिहूं पुर जाना ॥2 ॥

तब भुज दण्ड प्रचण्ड कृपाला। रावण मारि सुरन प्रतिपाला ॥
तुम अनाथ के नाथ गुंसाई। दीनन के हो सदा सहाई ॥3 ॥

ब्रह्मादिक तव पारन पावैं। सदा ईश तुम्हरो यश गावैं ॥
चारिउ वेद भरत हैं साखी। तुम भक्तन की लज्जा राखीं ॥4 ॥

गुण गावत शारद मन माहीं। सुरपति ताको पार न पाहीं ॥
नाम तुम्हार लेत जो कोई। ता सम धन्य और नहिं होई ॥5 ॥

राम नाम है अपरम्पारा। चारिहु वेदन जाहि पुकारा ॥
गणपति नाम तुम्हारो लीन्हो। तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हो ॥6 ॥

शेष रटत नित नाम तुम्हारा। महि को भार शीश पर धारा ॥
फूल समान रहत सो भारा। पाव न कोऊ तुम्हरो पारा ॥7 ॥

भरत नाम तुम्हरो उर धारो। तासों कबहुं न रण में हारो ॥
नाम शक्षुहन हृदय प्रकाशा। सुमिरत होत शत्रु कर नाशा ॥8 ॥

लखन तुम्हारे आज्ञाकारी। सदा करत सन्तन रखवारी ॥
ताते रण जीते नहिं कोई। युद्ध जुरे यमहुं किन होई ॥9 ॥

महालक्ष्मी धर अवतारा। सब विधि करत पाप को छारा ॥
सीता राम पुनीता गायो। भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो ॥10 ॥

घट सों प्रकट भई सो आई। जाको देखत चन्द्र लजाई ॥
सो तुमरे नित पांव पलोत्तत। नवो निदधि चरणन में लोटत ॥11 ॥

सिद्धि अठारह मंगलकारी। सो तुम पर जावै बलिहारी ॥
औरहु जो अनेक प्रभुताई। सो सीतापति तुमहिं बनाई ॥12 ॥

इच्छा ते कोटिन संसारा। रचत न लागत पल की बारा ॥
जो तुम्हे चरणन चित लावै। ताकी मुक्ति अवसि हो जावै ॥13 ॥

जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा। नर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा ॥
सत्य सत्य जय सत्यव्रत स्वामी। सत्य सनातन अन्तर्यामी ॥14 ॥

सत्य भजन तुम्हरो जो गावै। सो निश्चय चारों फल पावै ॥
सत्य शपथ गौरीपति कीन्हीं। तुमने भक्तिहिं सब विधि दीन्हीं ॥15 ॥

सुनहु राम तुम तात हमारे। तुमहिं भरत कुल पूज्य प्रचारे ॥
तुमहिं देव कुल देव हमारे। तुम गुरु देव प्राण के प्यारे ॥16 ॥

जो कुछ हो सो तुम ही राजा। जय जय जय प्रभु राखो लाजा ॥
राम आत्मा पोषण हारे। जय जय दशरथ राज दुलारे ॥17 ॥

ज्ञान हृदय दो ज्ञान स्वरूपा। नमो नमो जय जगपति भूपा ॥
धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा। नाम तुम्हार हरत संतापा ॥18 ॥

सत्य शुद्ध देवन मुख गाया। बजी दुन्दुभी शंख बजाया ॥
सत्य सत्य तुम सत्य सनातन। तुम ही हो हमरे तन मन धन ॥19 ॥

याको पाठ करे जो कोई। ज्ञान प्रकट ताके उर होई ॥
आवागमन मिटै तिहि केरा। सत्य वचन माने शिर मेरा ॥20 ॥

और आस मन में जो होई। मनवांछित फल पावे सोई ॥
तीनहुं काल ध्यान जो ल्यावै। तुलसी दल अरु फूल चढ़ावै ॥21 ॥

साग पत्र सो भोग लगावै। सो नर सकल सिद्धता पावै ॥
अन्त समय रघुबरपुर जाई। जहां जन्म हरि भक्त कहाई ॥22 ॥

श्री हरिदास कहै अरु गावै। सो बैकुण्ठ धाम को पावै ॥23 ॥

**सात दिवस जो नेम कर, पाठ करे चित लाय।
हरिदास हरि कृपा से, अवसि भक्ति को पाय ॥**

**राम चालीसा जो पढ़े, राम चरण चित लाय।
जो इच्छा मन में करै, सकल सिद्ध हो जाय ॥**